ख़ास ख़ोज-ख़बर

मिस्र के लोगों ने दी चेतावनी

3 हजार साल से सो रहे राजा तूतनखामुन को मत छुओ

● मंथन विदेश ब्यूरो

काहिरा। प्राचीन मिस्र के रहस्यमय राजा तूतनखामुन के शापित ताबूत को पहली बार दूसरी जगह ले जाने को लेकर स्थानीय लोगों ने प्रशासन को चेतावनी दी है। इस ताबूत को काहिरा के म्यूजियम में दिखाया जाना है जिसका निर्माण कार्य पूरा हो गया है। राजा तूतनखामुन प्राचीन मिस्र के सबसे चर्चित फेरो थे और जब उनके कब्र की खोज हुई थी तब दुनिया स्तब्ध रह गई थी। सबसे आश्चर्यजनक यह रहा कि बेबी किंग कहे जाने वाले राजा तूतनखामुन की इस कब्र को खोलने के कुछ महीने के अंदर ही 6 पुरातत्वविदों की मौत हो गई थी। मारे गए लोगों में खुदाई के लिए पैसा देने वाले लॉर्ड कार्नरवॉन भी शामिल थे। उस समय कहा गया था कि इन सभी लोगों को राजा तूतनखामुन का शाप लगा है। राजा तूत का खजाना पूरी दुनिया में फैलता रहा लेकिन उनके ताबूत को वहीं पर ही रखा गया। अब बेबी किंग का यह ताबूत भी मिस्र के ग्रैंड म्यूजियम में ले जाया जाने वाला है। इस म्यूजियम का 97 फीसदी निर्माण कार्य पूरा हो गया है। मिस्र की सरकार का कहना है कि कोरोना महामारी के बाद भी इस म्यूजियम को इसी साल खोला जाएगा।

एक ही जगह पर रखी जाएंगी 50 हजार कलाकृतियां

:जब म्यूजियम खुल जाएगा तो उसके अंदर 50 हजार कलाकृतियां एक ही जगह पर रखी जाएंगी। इसमें राजा तूत के सामान भी शामिल हैं। लक्सर शहर के स्थानीय पुरातत्वविद अहमद रबी मोहम्मद ने कहा कि अगर तूतनखामुन लक्सर छोड़ते हैं तो यहां का हरेक आदमी निराश हो जाएगा क्योंकि बेबी किंग वर्ष 1922 में पहली बार दुनिया के सामने आने के बाद हमेशा से यहीं पर अपने मकबरे में रहे हैं। अहमद ने कहा, जब ममी का परीक्षण हुआ था तो वह भी यही राजाओं की घाटी में हुआ था। वे लोग अपनी एक्सरे मशीन लेकर आए थे और राजा तूत कभी यहां से नहीं गए थे। लोग सोशल मीडिया में राजा तूत के ग्रैंड म्यूजियम में ले जाए जाने की चर्चा कर रहे हैं। एक अन्य टूर गाइड मोहम्मद ने कहा कि राजा तूत के यहां से जाने पर पर्यटकों के आने पर बहुत बुरा असर पड़ेगा। उन्होंने चेतावनी दी कि प्राचीन राजा को न छेड़ा जाए। यह लकड़ी का बना ताबूत था। मिस्र के पर्यटन मंत्रालय का कहना है कि इन पर तांबे की पत्ती चढ़ा होगी। साथ ही हड्डी से बनी अंगूठी है, एक नीले कांच की अंगूठी और चार गले के हार हैं जो एक सेरेमिक क्लिप से जुड़े हुए हैं। ये हार 24-27.5 इंच लंबे हैं और इनमें नीले के अलग-अलग शेड के मोती लगे हैं। इस खोज के डायरेक्टर होजे गेलन का कहना है कि इतने पुराने होने के बावजूद सभी कपड़े सही तरह से प्रिजर्व किए गए थे। होजे का कहना है कि इतने जेवरों के साथ ऐसे ताबूत में दफन किया जाना हैरान करने वाला है। उन्होंने संभावना जताई है कि इनका इस्तेमाल खेल या नृत्य के लिए किया जाता होगा। इस ताबूत के अलावा दूसरे ताबूत भी मिले हैं। इनमें से एक ममी के चेहरे पर टिन की प्लेट से लगी होरस की आंख देखी गई है। उस वक्त टिन बहुमूल्य धातु मानी जाती थी। इसलिए ऐसी प्लेट आमतौर पर नहीं देखी जाती हैं। लड़की के ताबूत के पास दूसरे मिट्टी के ताबूत हैं, दो बिल्लियों की ममी हैं, चमड़े के सैंडल और चमड़े की दो गेंदें हैं। हैरान करने वाली बात यह भी है कि लड़की के अवशेष सही से प्रिजर्व नहीं किए गए थे। इस वजह से रिसर्चर्स उसके मरने का कारण नहीं पता कर सके हैं। उसके आसपास मिले सामान से लगता है कि वह अमीर परिवार का हिस्सा रही होगी।

इस गड्ढे में 1.26 लाख साल पुरानी मिट्टी और बर्फ मौजूद है

धरती को पाताल में धंसा देगा ये गड्ढा, क्यों है ये हमारी दुनिया के लिए खतरा

● मंथन विदेश ब्यूरो

मास्को। साइबेरिया में दुनिया का सबसे बड़ा पमाफ्रॉस्ट गड्ढा है। पर्माफ्रॉस्ट में मतलब जहां की जमीन, मिट्टी करोड़ों-अरबों सालों से बर्फीले माहौल में जमी हुई हो। लेकिन अब ये गड्ढा चिंता का विषय बनता जा रहा है। ये लगातार अपना आकार बढ़ा रहा है। इस गड्ढे को बाटागाइका, बाटागे या बागाटाइका कहते हैं।

12 जुलाई को साइबेरिया की Ruptly.tv ने इसके ऊपर ड्रोन उड़ाया। तस्वीरें लीं। तब पता चला कि इस गड्ढे का आकार लगातार बढ़ता जा रहा है। यह गड्ढा 0.8 वर्ग किलोमीटर बड़ा है। यानी इसके अंदर 145 फुटबॉल मैदान आ जाएं। इसमें बना गहरा निशान 1940 में बनना शुरू हुआ था। ये लगातार बढ़ता जा रहा है।

जंगलों की कटाई की वजह से यहां पर मिट्टी का कटाव शुरू हो गया। इसकी वजह से लगातार यहां पर जमीन के नीचे जमी बर्फ पिघलने लगी। यहां पर बड़ा दलदली गड्ढा बन गया। पर्माफ्रॉस्ट में 80 फीसदी बर्फ होती है। इसके बाद मिट्टी या रेत या पेड़-पौधों के अंश। जब बर्फ पिघलती है तो बाकी चीजों से कीचड़ बनने लगता है। आसमान से देखने पर यह किसी बड़ी मछली जैसा दिखता है। यह साइबेरिया के साखा रिपब्लिक में मौजूद है। ड्रोन तस्वीरों से इस बात की पुष्टि हुई है कि ये लगातार बढ़ता जा रहा है। इस बात के प्रमाण सैटेलाइट तस्वीरों से भी मिले हैं। यहां पर हजारों करोड़ साल के जमी हुई मिट्टी, कीचड़ मौजूद है। माना जाता है कि इस गड्ढे में 1.26 लाख साल पुरानी मिट्टी और बर्फ मौजूद है। जो मध्य प्लीस्टोसीन काल के हैं। एक स्टडी के दौरान यहां पर वैज्ञानिकों को एक बाइसन (बड़ा भैंसा) का मांस मिला था, जो करीब 8000 साल पुराना था। ये तब दिखाई दिया, जब यहां की बर्फ पिघलनी शुरू हुई थी। यानी यहां कभी जानवर और पेड़-पौधे की मात्रा ज्यादा थी। वैज्ञानिकों को अभी यह नहीं पता कि अचानक यह गड्ढा इतनी तेजी से क्यों बढ़ रहा है। लेकिन आसपास रहने वाले स्थानीय लोगों को कहना है कि पिछले कुछ सालों में इसके गड्ढे की गहराई 66 फीट से 98 फीट हो गई है। यह एक बेहद दुर्लभ घटना है। जिसकी पुष्टि रूस के वैज्ञानिक भी करते हैं। रसियन एकेडमी ऑफ साइंसेस के वैज्ञानिक एलेक्सी लुपाचेव कहते हैं कि यह सच में एक दुर्लभ घटना है। यह दिखा रहा है कि कैसे हमारी धरती को जलवायु परिवर्तन से खतरा है। लाखों सालों से बर्फ में जमी यह जमीन अब कीचड़ और गड्ढे में बदलती जा रही है।

स्पेशल खबर

यहां के लोग मान्यताओं और परंपराओं की वजह से कपड़ा नहीं पहनते हैं

दुनिया का सबसे अनोखा गांव, जहां 90 साल से कपड़े नहीं पहनते हैं लोग, जानिए आखिर क्या है परंपरा

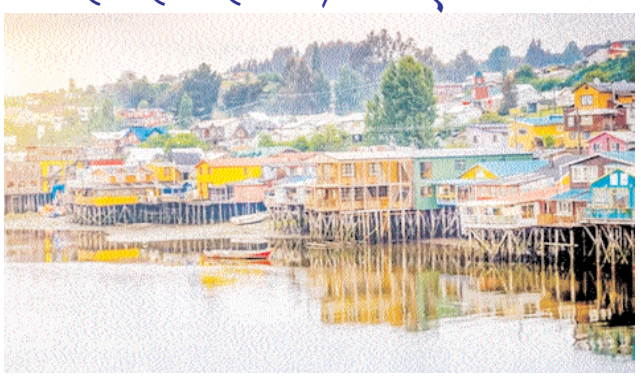

● मंथन विदेश ब्यूरो

न्यूज डेस्क। दुनिया में कई रहस्यमयी और अनोखी जगहें हैं। यह स्थान अजीबगरीब वजहों के कारण पूरी दुनिया में जाने जाते हैं। इनमें कई जगहें अजीब खानपाान, कुछ अपने रहन सहन के लिए जानी जाती हैं। आमतौर पर लोग कहीं बाहर जाते हैं या घर पर भी रहते हैं, तो कपड़े पहनकर ही रहते हैं। हालांकि, दुनिया में एक ऐसा गांव है, जहां पर एक अजीबोगरीब नियम का पालन किया जाता है। इस गांव के लोग 90 साल से इस अनोखे नियम का पालन कर रहे हैं।

दरअसल, ब्रिटेन में यह अनोखा गाँव स्थित है। यहां पर बीते 90 सालों से कपड़ा नहीं पहनते हैं यानी बिना कपड़े के ही रहते हैं। अब आपको यह जानकर यकीन नहीं हो रहा होगा, लेकिन यह पूरी तरह से सच है। एक मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, ब्रिटेन के इस गांव में लोग 90 साल से बिना कपड़ा के रह रहे हैं। ऐसा नहीं है कि इस गांव के लोग गरीब है। यहां के लोगों के पास दो कमरों का बंगला भी है।

सबसे बड़ी बात यह है कि इस गांव में रहने वाले लोगों के पास सभी तरह की सुविधाए हैं, लेकिन यहां के लोग मान्यताओं और परंपराओं की वजह से कपड़ा नहीं पहनते हैं। ब्रिटेन के हर्टफोर्डशायर में यह गांव स्थित है जिसका नाम स्पीलप्लाट्ज है। इस गांव में बच्चों से लेकर बूढ़ों तक कोई भी कपड़ा नहीं पहनता है।

स्पीलप्लाट्ज का जर्मन में मतलब होता है खेल का मैदान। हर्टफोर्डशायर में मौजूद यह अनोखा गांव ब्रिटेन की सबसे पुरानी कॉलोनियों में शामिल है। इस गांव में खूबसूरत मकान, स्विमिंग पूल और लोगों को पीने के लिए बीयर भी मिलती है। कहा जाता है कि 90 साल से अधिक समय से लोग इस अनोखे गांव में इसी तरह रह रहे हैं। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, स्पीलप्लाट्ज गांव में रहने वाले 82 वर्षीय इसेल्ट रिचर्डसन के पिता द्वारा साल 1929 में इस समुदाय की स्थापना की गई थी। उन्होंने कहा कि प्रकृतिवादियों और सड़क पर रहे लोगों में कोई अंतर नहीं है।

इस गांव की अनोखी परंपरा पर दुनियाभर के कई लोग डॉक्यूमेंट्री और शॉर्ट फिल्में बना चुके हैं। इस गांव में पोस्टमैन और सुपरमार्केट से सामानों की डिलीवरी करने के लिए लोग आते रहते हैं।

प्राचीन दस्तावेजों के मुताबिक, इस मंदिर का निर्माण नौवीं शताब्दी ईसा पूर्व हुआ था

स्पेन में मिला प्राचीन मंदिर, जानिए क्या है इसके पीछे का रहस्य

● मंथन खोजी संवाददाता

कोपेन हेगेन। स्पेन में एक प्राचीन मंदिर स्थित है जिसके बारे में चौंकाने वाली बात सामने आई है। कहा जाता है कि इस मंदिर में तानाशाह जूलियस सीजर और रोमन पूजा करने के लिए आए थे। भगवान हरक्यूलिस से इन सभी लोगों ने ताकत पाने के लिए प्रार्थना की थी। अब पुरातत्वविद सोच रहे हैं कि उन्होंने इस पौराणिक मंदिर को खोज लिया है।

प्राचीन दस्तावेजों के मुताबिक, इस मंदिर का निर्माण नौवीं शताब्दी ईसा पूर्व हुआ था। इसको हरक्यूलिस गैडिटेनस का मंदिर कहा जाता है। दक्षिणी स्पेन में सेविले विश्वविद्यालय स्थित है। इस विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं का कहना है कि उन्होंने एक स्मारकनुमा इमारत के निशान को देखा है। इस निशान को लाइट डिटेक्शन एंड रेंजिंग के इस्तेमाल से सैंक्टी पेट्री चैनल में देख गया है। शोधकर्ताओं ने एक संरचना की पहचान की है जिसका आयात 984 फीट लंबा और 492 फीट चौड़ा है। आईए जानते हैं इस मंदिर से जुड़ा रहस्य।

मंदिर में जलता रहता था दीपक

इस द्वीप का माप जहां कभी मंदिर स्थित था उसके समान है। बताया जाता है कि हरक्यूलिस गैडिटैनस का मंदिर 'स्तंभों वाला मंदिर' था। इस मंदिर में एक ज्वाला लगातार जलती थी। इस मंदिर के पुजारी इस दीपक को जलाकर रखते थे। मंदिर के स्तंभों पर जो चित्र बनाए गए हैं कांस्य में उकेरे हरक्यूलिस के बारह मजदूरों को दर्शाते हैं।

इससे पहले उत्तर-पश्चिमी पाकिस्तान में 2,300 साल पुराना बौद्ध मंदिर मिला है। इस बौद्ध काल के मंदिर को पाकिस्तानी और इतालवी पुरातत्वविदों ने खोजा है। बेशकीमती कलाकृतियां भी खुदाई में पाई गाई हैं।

ख़ास साप्ताहिक फ़ोटो

कटारमल सूर्य मन्दिर भारतवर्ष का प्राचीनतम सूर्य मन्दिर

बोलती तस्वीर कटारमल सूर्य मन्दिर भारतवर्ष का प्राचीनतम सूर्य मन्दिर है। यह अल्मोड़ा जिले के अधेली सुनार नामक गाँव में स्थित है। इसका निर्माण कत्यूरी राजवंश के तत्कालीन शासक कटारमल के द्वारा छठीं से नवीं शताब्दी में हुआ था। यह समुद्र सतह से लगभग 2116 मीटर की ऊँचाई पर पर्वत पर स्थित है। पौराणिक उल्लेखों के अनुसार सतयुग में उत्तराखण्ड की कन्दराओं में जब ऋषि-मुनियों पर धर्मद्वेषी असुर ने अत्याचार किये थे। तत्समय द्रोणगिरी (दूनागिरी), कषायपर्वत तथा कंजार पर्वत के ऋषि मुनियों ने कौशिकी (कोसी नदी) के तट पर आकर सूर्य-देव की स्तुति की। ऋषि मुनियों की स्तुति से प्रसन्न होकर सूर्य-देव ने अपने दिव्य तेज को वटशिला में स्थापित कर दिया। इसी वटशिला पर कत्यूरी राजवंश के शासक कटारमल ने बदादित्य नामक तीर्थ स्थान के रूप में प्रस्तुत सूर्य-मन्दिर का निर्माण करवाया होगा। जो अब कटारमल सूर्य-मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है।

---मंथन दृष्टि विज्ञापन दरें---

फुल पेज ब्लैक एण्ड व्हाइट	=	38000 रूपए
फुल पेज कलर	=	60,000 रूपए
हॉफ पेज ब्लैक एण्ड व्हाइट	=	19,000 रूपए
हॉफ पेज कलर	=	30,000 रुपए
क्वार्टर पेज ब्लैक एण्ड व्हाइट	=	10,000 रूपए
क्वार्टर पेज कलर	=	15,000 रुपए

नोट :-
1. ब्लैक एण्ड व्हाइट विज्ञापन का भुगतान 42 रूपए प्रति वर्गसेमी की दर से रहेगा।
2. कलर विज्ञापन का भुगतान 65 रूपए प्रति वर्गसेमी की दर से रहेगा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ. रजत सक्सेना द्वारा जेयन ऑफसेट वर्क्स, 119, पुल बोगदा, भोपाल (म.प्र.)-462023 से मुद्रित एवं म.न. 31, सेक्टर-1, शक्तिनगर, भोपाल, मध्यप्रदेश-462024 से प्रकाशित। प्रधान संपादक डॉ. रजत सक्सेना, संपादक- महेश प्रताप जड़िया, सभी विवादों का न्यायक्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा।